रास्ते हैं तो... मंज़िल है...

आप जिस प्रकृति में खड़े हो, उसको ही संस्कारित किया जा सकता है। प्रकृति के नियमों के माध्यम से आप उसके पार भी जा सकते हो। सीढ़ी के सहारे ही आदमी पार भी चला जाता है, रास्ते के सहारे ही आदमी मंज़िल तक पहुँच जाता है, फिर रास्ते को छोड़ देता है। लेकिन रास्ते के विपरीत चलकर कोई मंज़िल पर नहीं पहुँचता।

आज हज़ारों वर्ष की धारणाओं ने हमारे मन को इस भ्रान्ति से विकृत कर दिया है कि जो भी आप देखते हैं, वह निसर्ग का सत्य नहीं होता, अपितु हमारी अपनी धारणाओं से देखा गया विकृत रूप होता है। फिर उससे आप जो भी निर्णय लेते हैं, वे भ्रान्ति में ले जाते हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

अब प्रश्न ये उठता है कि इन भ्रान्तियों और इसके दुष्परिणामों से मुक्त कैसे हों? क्या कोई उपाय है? या यूँ ही जन्म और मृत्यु के बीच भ्रांतिपूर्ण समय समाप्त कर दिया जाये?

तो इसका उत्तर है, हाँ, जीवन को बदला जा सकता है, निसर्ग (स्वभाव) से, निसर्ग के विपरीत नहीं। क्योंकि आप प्रकृति से ही निर्मित हो, उसके विपरीत चलने का कोई उपाय नहीं है।

आप जिस प्रकृति में खड़े हो, उसको ही संस्कारित किया जा सकता है। प्रकृति के नियमों के माध्यम से आप उसके पार भी जा सकते हो। सीढ़ी के सहारे ही आदमी पार भी चला जाता है, रास्ते के सहारे ही आदमी मंज़िल तक पहुँच जाता है, फिर रास्ते को छोड़ देता है। लेकिन रास्ते के विपरीत चलकर कोई मंज़िल पर नहीं पहुँचता।

लेकिन तर्क में भ्रान्ति हो सकती है। अगर मैं आपसे कहूँ कि यह रास्ता मंज़िल तक पहुँचा देगा, लेकिन ध्यान रखना, मंज़िल पर जब पहुँचोगे तो इस रास्ते को छोड़ देना होगा; क्योंकि अगर आपने रास्ते को पकड़ लिया तो मंज़िल को नहीं पा सकोगे, तो इसका परिणाम ये भी हो सकता है कि आप यह भी सोच सकते हो कि जिस रास्ते को अंत में छोड़ ही देना है, उसे पहले ही क्यों न छोड़ दिया जाए! लेकिन तब आप मंज़िल तक कभी नहीं पहुँच सकोगे।

रास्ते को पकड़ना भी होगा और छोड़ना भी होगा। प्रारंभ में पकड़ना होगा, अंत में छोड़ना होगा। लेकिन इसका उल्टा अर्थ दो तरह से हो सकता है जो एक तो यह कि, रास्ते को पकड़ें ही क्यों जब उसे छोड़ना ही है। यह तर्कयुक्त लगता है कि जो चीज़ छोड़ ही देनी है, उसे पकड़ना ही क्यों? लेकिन जिसे आपने पकड़ा ही नहीं है, उसे आप छोड़ न पाओगे, और बिना छोड़े आप मंज़िल तक नहीं पहुँचोगे। इसका दूसरा उपद्रव भी संभव है। वो ये है कि जिस रास्ते को पकड़ा है, उसको छोड़ेंगे नहीं। जब पकड़ ही लिया तो फिर छोड़ना क्या! तब भी आप मंज़िल तक नहीं पहुँच पाओगे। रास्ता मंज़िल तक ले जाता है, मंज़िल में नहीं ले जाता, और जब आप रास्ते को छोड़ देते हो, तो मंज़िल में प्रवेश होता है।

इसे आगे और स्पष्ट किया जाये तो कहेंगे:- सीढ़ियाँ छत तक ले जाती हैं, छत में नहीं ले जातीं। अगर आप सीढ़ियों पर ही खड़े रहो तो आप छत के पास पहुँच गए, लेकिन छत पर नहीं पहुँचे। लेकिन सीढ़ियों को अगर आप पहले ही छोड़ दो, तो आप छत के पास भी न पहुँच सकोगे। सीढ़ियाँ छोड़नी पड़ती है, इसका यह अर्थ नहीं कि आप सीढ़ियों के दुश्मन हो जाओ। सीढ़ियाँ पकड़नी पड़ती है, इसका यह अर्थ नहीं कि सीढ़ियों के आप प्रेमी हो जाओ। सीढ़ियों का उपयोग करना है।

निसर्ग सीढ़ि है, वहाँ आप खड़े हो। इस निसर्ग के लिए यह सूत्र है। पहला कदम है जीवन का सम्मान करो। वह निसर्ग का सम्मान है। उसे समझो, अगर पार जाना है। पार जाना है ज़रूर, क्योंकि निसर्ग में ही रहकर आप परम आनंद को उपलब्ध न हो सकेंगे। निसर्ग में दु:ख और सुख दोनों होंगे।

निसर्ग में रहकर ही पार जाना है, क्योंकि द्वंद्व ही तो उपद्रव है और आपको उस घड़ी को उपलब्ध करना है जहाँ

- शेष पेज 8 पर

संगम के ज्ञान से बुद्धि को शुद्ध श्रेष्ठ बना करो सारे कल्प के लिये कमाई

जब से हम बाबा के बने हैं तब से बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है...हर एक ऐसे महसूस करते हो ना! बाबा का बनने से बहुत सुख मिला है। अभी हर आत्मा को बाबा कहता है तुमको कर्मातीत बनना है। तो यह लगन किसको है? क्योंकि अभी किसी के लिये भी मौत आने में देरी नहीं है। मौत शब्द हम कहते नहीं हैं परन्तु अन्दर अपने दिल से पूछो, हरेक की दिल बताती है कि मुझे क्या करने का है। कोई भी सेवा प्यार से करते रहो, जहाँ भी सेवा हो भारत में या विदेश में.. पर अन्दर में यही लगन हो कि मुझे कर्मातीत बनना है।

क्योंकि मुझे यह खुशी है कि बाबा की जो शिक्षायें हैं, जो पढ़ाई है, सारे विश्व को अच्छी तरह से पता चल गया है कि ब्रह्माकुमारियाँ क्या कर रही हैं? पहले कितने भी विद्वान, पण्डित, आचार्य हैं उनके द्वारा सुनते-सुनते कोई फायदा नहीं हुआ है। अभी मेरे मीठे बाबा ने अपना बनाके मुस्कराना सिखाया है। हम उसका शुक्रिया मानते हैं, दिल कहे शुक्रिया...। अगर दिल शुक्रिया नहीं कहती तो दिमाग भी शुक्रिया कैसे कह सकता है! बाबा की मुरली में था ब्रह्माबाबा को फिकर है इतने बच्चे आयेंगे, रहेंगे कहाँ? बाबा कहते तुम फिकर नहीं करो कि कहाँ रहेंगे। अभी यहाँ शांतिवन, मनमोहिनी वन सब देखो.. कितने बच्चों के रहने का प्रबन्ध हुआ है। तो ब्रह्माबाबा को शिवबाबा ने कहा वेट एण्ड सी या हमको कहा? वन्डरफुल बाबा है, वन्डरफुल ड्रामा है। बाबा क्या से क्या बनाता है, वन्डरफुल है। हम अन्दर से बाबा का शुक्रिया मानते हैं। हम कोई से भी नाराज़ नहीं हैं। है कोई नाराज़? बहुत निर्लोभी, निर्मोही अवस्था चाहिए। अगर किसी व्यक्ति और वैभवों को अपना माना, उन्हें मेरा समझा तो यह भी मिक्सचर मोह हो गया। अपना है तो सब अपना है। हम पुरानी दुनिया को नया बनाने के लिए हैं। नई दुनिया आने में देरी नहीं है। पाण्डव भवन में बाबा के कमरे के बाहर छोटा वरांडा था, वहाँ बाबा खटिया पर बैठता था। वहाँ एक एक बच्चे को बाबा ऐसी अच्छी भासना देता था जो सारी रात स्वप्नों में भी वही याद रहता था। अभी कौन है जिसके स्वप्नों में बाबा आता है? है कोई जिसके स्वप्नों में, संकल्पों में भी बाबा है? लोग तो सर्वव्यापी कहते हैं, कण-कण में भगवान है। हम सबका अनुभव क्या है! हर एक के साथ बाबा है।

भगवान का जो काम है वो मनुष्य नहीं कर सकता है, परन्तु शिवबाबा ने ब्रह्मा तन द्वारा ही क्या से क्या बना दिया है इसलिए सहजयोगी हैं, नैचुरल योगी हैं। संगम का ज्ञान बुद्धि को शुद्ध श्रेष्ठ बनाता है। बाबा का बनने से सारे कल्प के लिये बहुत-बहुत कमाई हो रही है। मैं समझती हूँ सारे कल्प में ऐसी शान्ति की शक्ति से रहना, विदेश में, भारत में सब जगह शान्ति फैलाना। यह भी समझ भगवान ने दी है कि अब क्या करने का है! संगम पर हम रावण राज्य में नहीं हैं। हमको बाबा ने रावण राज्य से निकाल दिया। अपना राज्य भाग्य लेने के लिये तैयार कर लिया। कितना अच्छा बाबा है! हमको अपना बनाके कहता है देखो, सूक्ष्म यह तीसरा नेत्र है मस्तक पर।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

आप लोगों को लगता है मेरी दादी है! लगता है? अच्छा। मुझे पता नहीं था कभी मुझे दादी बनायेंगे। दादी, दादी है। दीदी, दीदी है। बाबा के अव्यक्त होने के बाद दादी दीदी ने कैसे यज्ञ चलाया है! हम तो उनके साथी बन गये। ठीक है! भगवान के साथी हैं या दादियों के साथी हैं? कितनी बाबा के बच्चों को खुशी है, हम भगवान के डायरेक्ट बच्चे हैं, जिसको दुनिया पुकारती है ओ राम! आगे सीताराम कहते थे। हरेक ने दिलाराम बाबा को दिल दे दी, तो दिल में कोई इच्छा नहीं, कोई ममता नहीं है। इच्छा है तो ममता है इसलिए कोई भी इच्छा नहीं है।

सारे दिन में कोई कहाँ, कोई कहाँ होते हैं सेवा में, लेकिन नुमाशाम के टाइम सब इकट्ठे होते हैं। यह क्लास है या क्या है, क्योंकि मैं क्लास कराना नहीं जानती हूँ। मिलना आता है। अपनी हिस्ट्री और यज्ञ हिस्ट्री को स्मृति में लायें तो लगता है बाबा ने अपना बनाके दुनिया में रहते हमें उपराम बना दिया है। बुद्धि में एक बाबा दूसरा न कोई और आपस में भी लगाव, झुकाव नहीं है। मेरा तो किसी से कुछ नहीं है। ऐसे कोई हैं जो लगाव झुकाव से मुक्त हैं? अगर मुक्त रहेंगे तो संकल्प श्वांस समय सब सफल होता रहेगा। यह भी बाबा ने सफल करने की बहुत अच्छी विधियां बताई हैं।

हर बच्चे की अवस्था अनुसार ही बाबा के डायरेक्शन्स तथा मुरली

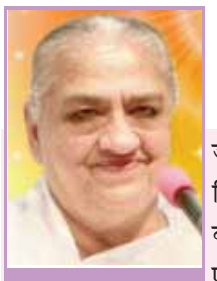

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

जब कोई ग्रुप बाबा से मिलने आता है तो बाबा उस ग्रुप के एक एक बच्चे की अवस्था को पहले चेक करता है, क्योंकि हर एक की अवस्था तो नीचे ऊपर होती रहती है ना! तो बाबा पहले चेक करता है कि इस समय यह किस स्थिति में है? फिर बाबा हर बच्चे के पास्ट को भी थोड़ा चेक करता है कि जिस समय वह बाबा के पास आई उस समय क्या हलचल थी, क्योंकि उस समय भी हलचल तो होती है ना! हलचल भी कई प्रकार की होती है, उसे भी बाबा चेक करता है। फिर बाबा देखता है कि इस बच्चे की अभी वृत्ति लाभ लेने की है या मिक्स है? बाबा जैसा बनाना चाहता है वैसा यह बन सकेगा! जब मधुबन में खास आते हैं तो अपनी स्थिति पर भी तो खास ध्यान रखना चाहिए ना! बाबा तो उनके चलने फिरने, क्लास में बैठने से ही चेक कर लेता है और समझ जाता है कि बच्चे की टोटल अवस्था क्या रहती होगी। अगर अच्छी अवस्था वाला बच्चा है तो भी बाबा जान लेता है कि यह महारथी है, घोड़ेसवार है या प्यादा है। मैजॉरिटी तो महारथी वा घोड़ेसवार हैं। तो बाबा चेक करता है कि इस ग्रुप में महारथी कितने हैं और घोड़े सवार कितने हैं। फिर उसी अनुसार बाबा डायरेक्शन देता है, ग्रुप के अनुसार ही बाबा की मुरली चलती है। बाबा बच्चों के वायब्रेशन्स से ही चेक कर लेता है कि यह ग्रुप विशेष किन बातों के सुनने व ग्रहण करने का पात्र है। फिर उस ग्रुप को उसी अनुसार ही हैण्डलिंग देता है। बाबा पहले से बताता नहीं है लेकिन बाबा की मुरलियों का सार उसी अनुसार होता है। ऐसे नहीं, मैं बाबा को किसी के बारे में कुछ बताऊँ फिर बाबा मुरली चलायेगा। लेकिन किस ग्रुप को क्या चाहिए, वह बाबा के पास पहले से ही तैयार रहता है कि इस ग्रुप को विशेष इस प्वाइंट का बल चाहिए, उसी अनुसार मुरलियाँ चलाता है और मुरली चलाने के बाद फिर उसकी रिज़ल्ट भी देखता है। लास्ट में जब बच्चे चले जाते हैं तो भी चेक करता है कि इन्हों का क्या हालचाल रहा! बाबा मुझे सब बातें नहीं सुनाता है, कुछ समाचार सुना देता है कि इस ग्रुप का ऐसे था! लेकिन मुरलियों से पता पड़ता है कि इस गुप की क्या विशेषता थी और इस ग्रुप की क्या चाहना थी। तो बाबा की मुरली में यह सब कुछ समाया हुआ होता है फिर जो भी कैच करे, नहीं करे। बाबा मुरली में सब प्रकार के इशारे देता है फिर उससे जानने वाले जान लेते हैं और उसी अनुसार वह भी हैण्डल करते हैं। जो दादियाँ भी हैं, वह भी बाबा के उस सार को कैच करके फिर उसी अनुसार हैण्डलिंग देती हैं।

बाबा कितना प्यारा है, जो हर एक बच्चा कहता है मेरा बाबा, मीठा बाबा। तो हम सुनते हैं, जब कोई बात करता है तो पहले कहता है ओम् शांति, फिर कहेगा मेरा बाबा। मेरा बाबा मुझे देख रहा है। बाबा मेरे से बात कर रहा है। पहले बाबा अक्षर आयेगा फिर दूसरी बात आयेगी। तो हमको बहुत खुशी होती है कि हमारा बाबा है। यह जो फीलिंग है मेरा बाबा, यही हम सबको आगे बढ़ाती है। हर एक के दिल से निकलता है, जिगर से निकलता है मेरा बाबा। तो यह मेरा बाबा कभी नहीं भूले। चाहे बाबा एक मास के बाद मिले या कितना भी समय के बाद मिले, लेकिन हर एक के दिल से मेरा बाबा निकलता है।

देखो, हम सब कितने भाग्यशाली हैं जो भगवान भी हमारे भाग्य का वर्णन करता है। मेरे बच्चे, मेरे बच्चे कह करके कितना बाबा हम लोगों को प्यार करता है। मेरे बच्चे ऐसे हैं, मेरे बच्चे ऐसे हैं। जब बाबा मेरे बच्चे कहता है तो मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। बाबा के मुख से जब मेरे बच्चे निकलता है तो उस समय बाबा का चेहरा देखने वाला होता है। तो यह जो मिलन होता है, यह बहुत सुंदर है और कभी-कभी होता है। रोज़ नहीं होता है। तो हम बड़े भाग्यवान हैं जो बाबा के मुख से हमारे लिए महावाक्य निकलते हैं, इतना बड़ा भाग्य हमारा नूंधा हुआ है।